॥ श्रीः ॥

॥ सुदर्शनाष्टकम् ॥

प्रतिभटश्रेणिभीषण [1]वरगुणस्तोमभूषण
जनिभयस्थानतारण जगदवस्थानकारण ।
निखिलदुष्कर्मकर्शन निगमसद्धर्मदर्शन
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन ॥ १

शुभजगद्रूपमण्डन [2]सुरगणत्रासखण्डन
शतमखब्रह्मवन्दित शतपथब्रह्मनन्दित ।
प्रथितविद्वत्सपक्षित भजदहिर्बुध्न्यलक्षित
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन ॥ २

स्फुटतटिज्जालपिञ्जर पृथुतरज्वालपञ्जर
परिगतप्रत्नविग्रह [3]परिमितप्रज्ञदुर्ग्रह ।
प्रहरणग्राममण्डित परिजनत्राणपण्डित
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन ॥ ३

निजपदप्रीतसद्गुण निरुपधिस्फौतषड्गुण
निगमनिर्व्यूढवैभव निजपरव्यूहवैभव ।
हरिहयद्वेषिदारण हरपुरप्लोषकारण
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन ॥ ४

---

१. परगुण, २. सुरजन, ३. पटुतरप्रज्ञ

दनुजविस्तारकर्तन जनितमिस्राविकर्तन
दनुजविद्यानिकर्तन [१]भजदविद्यानिवर्तन ।
अमरदृष्टस्वविक्रम समरजुष्टभ्रमिक्रम
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन ।। ५

प्रतिमुखालीढबन्धुर पृथुमहाहेतिदन्तुर
[२]विकटमायाबहिष्कृत [३]विविधमालापरिष्कृत ।
[४]पृथुमहायन्त्रतन्त्रित [५]दृढदयातन्त्रयन्त्रित
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन ।। ६

महितसम्पत्सदक्षर विहितसम्पत्षडक्षर
षडरचक्रप्रतिष्ठित सकलतत्त्वप्रतिष्ठित ।
विविधसंकल्पकल्पक विबुधसंकल्पकल्पक
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन ।। ७

भुवननेतस्त्रयीमय सवनतेजस्त्रयीमय
निरवधिस्वादुचिन्मय निखिलशक्ते जगन्मय ।
अमितविश्वक्रियामय शमितविष्वग्भयामय
जय जय श्रीसुदर्शन जय जय श्रीसुदर्शन ।। ८

द्विचतुष्कमिदं प्रभूतसारं पठतां वेङ्कटनायक प्रणीतम् ।
विषमेऽपि मनोरथः प्रधावन्न विहन्येत रथाङ्गधुर्यगुप्तः ।।

श्री वेदान्तदेशिकप्रणीतं सुदर्शनाष्टकं सम्पूर्णम् ।।

---

१. जगदविद्यानिवर्तन २. विविधमाया ३. विकटमाला ४. स्थिरमहा-यन्त्रयन्त्रित ५. दृढदयायन्त्रयन्त्रित